लुढ़ककर जान बचाती है यह मकड़ी

नरेंद्र देवांगन

प्रकृति में अनेक विचित्र प्राणी पाए जाते हैं। इन जीवों के व्यवहार को जानकर कई बार वैज्ञानिक तक हैरान हो जाते हैं। अब नामिब रेगिस्तानों में पाई जाने वाली मकड़ी को ही लें। यह मकड़ी खतरा सामने आते ही अपने पांवों को मोड़कर अपने शरीर को गोलाकार बना लेती है। इसके बाद यह रेत के टिब्बों के शीर्ष से ढलान पर लुढ़कने लगती है। भले ही जीव जगत में कुछ दूसरे प्राणी भी अपने पांवों को मोड़कर गोलाकार बन लुढ़क सकते हैं, लेकिन रेगिस्तानों में पाई जाने वाली मकड़ी ही एकमात्र है जो लुढ़कने के दौरान अपनी दिशा पर भी नियंत्रण रख सकती है।

अपने दुश्मन बर्र को देखते ही *कार्पाराक्ने ओरियोलेवा* नामक यह मकड़ी चक्करदार बनकर तेज़ गति से लुढ़कने लगती है। टिब्बे के शीर्ष पर बर्र मकड़ी को तलाशता ही रह जाता है। वैज्ञानिकों ने तेज़ गति की फोटोग्राफी की मदद से लुढ़कते समय मकड़ी की रफ्तार और उसके द्वारा बनाए जाने वाले चक्करों की गणना की है। ढलवां बालू पर डेढ़ इंच लंबी मकड़ी एक सेकंड में अधिकतम पांच फीट की दूरी तय कर सकती है। औसतन एक सेकंड में मकड़ी 20 चक्कर लगाती है। इस प्रकार देखा जाए तो इस मकड़ी के लुढ़कने की रफ्तार 200 कि.मी. प्रति घंटा चलने वाली कार के तुल्य होती है।

नामिब की चटख धूप से बचने के लिए दिन के समय यह मकड़ी रेत में छेद बनाकर उसी में घुसी रहती है। रात होने पर यह बाहर निकलकर अपने शिकार की तलाश शुरू करती है। गहरे गड्ढे में रहने के कारण मकड़ी अपने अधिकांश शत्रुओं की पहुंच से दूर रहती है। मगर इस मकड़ी की ताक में बर्र बैठी रहती हैं।

मादा बर्र मकड़ी को देखते ही उसे डंक मारकर निश्चेष्ट कर देती है। इसके बाद वह उसे कुछ देर के लिए रेत में दबाकर किसी बेहतर जगह पर छिपाने के लिए स्थान का चुनाव करने को निकल पड़ती है। उचित जगह मिल जाने पर वह वापस लौटती है और कभी-कभी निश्चेष्ट पड़ी मकड़ी को सैकड़ों कीट खींचकर ले जाते हैं। इस नए अपेक्षाकृत नम स्थान पर मकड़ी को रखने के बाद मादा उस पर सिर्फ एक अंडा देती है। अंडे से जब कुछ दिनों के बाद एक परजीवी लार्वा निकलता है तो वह निश्चेष्ट किंतु जीवित मकड़ी के शरीर को अपने भोजन के लिए इस्तेमाल करना शुरू कर देता है। जब यह लार्वा वयस्क हो जाता है तो इस मकबरे से बाहर निकल आता है और अपने साथी की तलाश में जुट जाता है। बर्र अपना तीन-चौथाई समय मकड़ी की तलाश में ही लगा देती है। जब बर्र को मकड़ी का गड्ढा दिख जाता है, तो वह इस गड्ढे के आसपास अनेक गड्ढे खोद देती है। इसके बाद वह मकड़ी के गड्ढे में घुस जाती है, लेकिन मकड़ी उसे खदेड़कर बाहर निकाल देती है। इस तरह के कई प्रयास बर्र करती है, जो प्रायः निष्फल रहते हैं। वास्तव में बर्र जानबूझकर ऐसा करती है। इस तरह के कई प्रयासों के बाद उसे मकड़ी के आकार-प्रकार, उसके गड्ढे की लंबाई-चौड़ाई, मकड़ी के आक्रमण के अंदाज़ आदि के सम्बंध में आवश्यक जानकारियां मिल जाती हैं।

ढीली रेत पर बनने वाली सबसे बड़ी ढाल 33 डिग्री की बनती है। इस कोण पर रेत खोदना बर्र के लिए लगभग असंभव होता है। मज़े की बात यही है कि मकड़ी अपने छिपने के लिए लगभग 33 डिग्री ढाल के पठार पर ही अपना गड्ढा खोदती है। लेकिन कभी-कभी रेत के असंतुलन के कारण मकड़ी का गड्ढा अपने आप ढह जाता है। ऐसी स्थिति में मकड़ी तुरंत एक काम चलाऊ अस्थाई गड्ढा बना

लेती है। यही वह समय है जब मकड़ी की ताक में लगी बर्र उस पर काबू पा लेती है।

बर्र द्वारा हमला किए जाने के बावजूद उसके डंक से बच जाने की स्थिति में मकड़ी के पास बचकर भाग निकलने के लिए कोई जगह नही होती। 'लड़ो या मरो' ही ऐसे में एकमात्र उपाय है। ऐसे में मकड़ी बर्र को डराने के लिए एक अनोखा प्रदर्शन करती है। वह अपनी लंबी टांगों पर अपने शरीर को एकदम ऊंचा उठा लेती है। इसके बाद अचानक ही यह भरभरा कर बैठ जाती है। इस प्रकार यह ऊपर-नीचे गिरते हुए बर्र को आश्चर्य में डाल देती है। ऐसे में अगर बर्र इसे छूने का प्रयास करे तो यह उसे तत्काल अपने पंजों में जकड़कर उसे काट लेती है। लेकिन बर्र के खिलाफ यह तरीका कारगर साबित नहीं हो पाता, क्योंकि वे पहले ही उड़कर दूर भाग जाती हैं और हमला करने पर मकड़ी को डंक भी मार सकती हैं। इसलिए मकड़ी के पास भागने के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं होता। चक्करदार मकड़ी तेज़ी से भाग सकती है, लेकिन लंबी दूरी तय नही कर सकती। दो सेकंड में ही 6 फीट की दूरी चलने के बाद वे कई सेकंड तक दोबारा चलने के लिए आराम करती हैं। तीस फीट की दूरी तय करने में मकडी को एक मिनट का समय लग जाता है। शत्रु के एकदम पास होने की स्थिति में इतनी देर तक आराम करना मकड़ी के लिए अकसर घातक साबित होता है। ऐसे में चक्करदार चाल मकड़ी का जीवन बचाने में सफल रहती है। ***(स्रोत फीचर्स)***